संपादक की कलम से.....

रामअवतार बैरवा

कविता की शक्ति और भक्ति

जीवन में अगर कोई सबसे कठिन कार्य है तो वह है साहित्य लिखना और सबसे सरल कार्य है तो वह भी साहित्य का लिखना ही है। साहित्य लेखन के लिए न कोई निर्धारित योग्यता होती है, न निर्धारित समय होता है, न ही किसी विशेष मार्ग दर्शन की आवश्यकता होती है। तुलसी, कबीर, ग़ालिब, सभी अनपढ़ थे । यहां तक कि निराला भी अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु उनकी लेखनी के शब्द सीधे आकाश से उतरे थे -

'रवि हुआ अस्त : ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का, तीक्ष्ण-शर-विधृत-क्षिप्र-कर वेग-प्रखर,
शतशेलसंवरणशील, नीलनभ-गर्ज्जित-स्वर,
प्रतिपल-परिवर्तित-व्यूह-भेद-कौशल-समूह,
—
राक्षस-विरुद्ध प्रत्यूह,—क्रुद्ध-कपि-विषम—हूह,'

'राम की शक्ति पूजा' की एक-एक पंक्ति, एक -एक शब्द मानो किसी अलौकिक शक्ति से परिष्कृत होकर आए हैं । निराला खुद ही राम बनते हैं, खुद ही मां भवानी बनते हैं , अपने भीतर की शक्ति को जगाते हैं और नया आत्मबल प्राप्त करते हैं । ये ताकत कविता में अंतर्निहित होती है। वह खुद शब्द खोजकर आगे रखती जाती है। आवश्यकता है उसमें जीभर रमने की , उसमें खो जाने की, सब-कुछ भूलकर उसके हो जाने की । कवि को एक समय तक ही कविता लिखनी पड़ती है, उसके बाद कविता खुद कवि को लिखना शुरू कर देती है। अपनी धुन में मस्त कबीर को अधिक सोचने की जरूरत नहीं पड़ती, जरा-सी सोच में संबंधों में सारे तार बयां हो जाते हैं -

'पात झरता यों कहै, सुनि तरवर बनराइ।
अब के बिछुड़े ना मिलैं, कहुँ दूर पड़ैंगे जाइ॥'

आपके सम्बन्ध कितने भी प्रगाढ़ हों, हर जीव की भक्ति और शक्ति अलग होती है। जीव दुबारा अपनों के बीच जन्म ले, यह जरूरी नहीं।

गालिब जीवन की पूरी सच्चाई कितनी मासूमियत से कह जाते हैं -

'हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले.
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।'

गालिब से किसी ने पूछा था कि आपका सबसे प्रिय शेर कौनसा है तो उनका जवाब था कि वह तो अभी लिखा ही नहीं। बिल्कुल यही जवाब आज के चर्चित गीतकार संतोष आनंद जी का होता है कि वो भी यही कहते हैं -'अभी तो लिखूंगा।'

कवि एक कविता में अपनी समूची कल्पना शक्ति, सारा भूगोल और खगोल छान लेता है फिर भी यदि कोई हसरत रह जाती है तो यह जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है । ईश्वर से सदा कुछ मांगते रहने का अहसास है । उसको सदा बड़ा मानते रहने की आत्मिक शक्ति है।

कहते हैं कि तुलसीदास से रामचरितमानस देवताओं ने खुद ने खुद लिखवाई थी - यह गलत ही नहीं, सरासर ग़लत है। हर रचनाकार के लेखन के पीछे कोई शक्ति सदा खड़ी रहती है । साहित्य देव ही लिखवाते हैं । उनकी मौजूदगी नहीं होती पर एक हवा आती है, उस हवा के दौरान अगर साहित्य रच दिया तो अजर-अमर है अन्यथा सालों-साल सोचने पर भी एक पंक्ति नहीं तैयार होती । तुलसी, कबीर, ग़ालिब, निराला की तमाम रचनाएं उसी पावन हवा की उपज हैं।

'राम की शक्ति पूजा' कोई साधारण रचना नहीं है, शुद्ध साहित्यिक , हजारों प्रतीकों का एक ऐसा पुंज है, जिसमें सातों आसमां पार तक की तमाम कल्पनाएं, प्रबल आराधनाएं शामिल हैं।

'कामायनी' हृदय और मस्तिष्क को एकरागी बनाती है तो 'राम की शक्ति पूजा' विवेक के चेतना स्थल को प्रबल बनाती है।

अगर कविता में विवेक, वेदना और नैतिकता नहीं तो तीन - चार सौ क्या किसी के तीन-चार करोड़ भी सोशल मीडिया पर अनुयायी हो जाएं तब भी यह भ्रम न पाला जाए कि वो बहुत बड़ा कवि हैं। कविता का कोई मोल नहीं होता है। यह एक साधना है, जो व्यक्ति, समाज और मानवीयता को सभ्य और सहज बनाती है ।